मुनि भुधररचित सरस्वती-बार मासो ॥

सं. विजयशीलचन्द्रसूरि

चारणी लढणमां, मिश्र मारवाडी भाषामां, १९ या २० मा शतकमां मुनि भूधर नामे कोई जैन परंपराना साधुए रचेल आ रचनानी विशिष्टता एकज के तेनो विषय स्थूलभद्र-कोशा, नेमराजुल, कृष्णराधा वगेरे न होतां 'सरस्वती देवी' छे. अलबत्त, विद्यानी देवी सरस्वतीने नायिका बनाव्या छतां, तेना स्वरूप, स्वभाव के जीवन अने सामर्थ्य वगेरे विषे कोई ज वात के वातावरण आ रचनामां प्राप्त थतुं नथी, जे अनपेक्षित लागे छे. मात्र प्रथमना त्रण अने छेल्लुं-१६मुं पद्य-एमां देवी प्रत्ये प्रार्थनानुं वलण वर्ताय छे. बाकी तो चीलाचालु, सामान्य, भौतिकताभर्युं वर्णन जोवा मळे छे.

मित्र मुनि धुरन्धर विजयजीए वढवाण-भण्डारमां छूटक पानांरूपे प्राप्त आ कृतिनी जेरोक्स करावेली, तेना आधारे आ सम्पादन करवामां आव्युं छे.

—x—

अथ श्री सरस्वतीनो बारमासो छंद लषीतं ।

दुधक : ॐ नमो देवाधिदेवं, तास प्रसादे श्रुत समरेवं
श्रुतसांमण ते जगत कहेवं, ते सरस्वतीने नीत्य प्रणमेवं ॥१॥

नित्य प्रणम्या पुरेजि(ज)ननि आसं
अस्खलित आपे बुद्धि प्रकासं ।
सरस्वतीने करो निवासं
सेवक छंद करे बारमासं ॥२॥

बारमास बालिक परि बोले, भावि भक्ति नवि जाण्युं तोले ।
षान्ति करी माता राखो खोले, तो करुणाये भक्ति कमलदल खोले ॥३॥

छंद : वैताल ॥

तो कोले दिनकर अवनि उपर **मास चैतर** अतीतपे
झरे वह्नि परजल तरवर नीर सरवरनो खपे ।
लुह झाल झडपे मीन कलपे छपे उडे नीरवती
इण मास माता करो साता सुबुधदाता सरस्वती ॥४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वैशाख वारु दि[व]स चारु भारु भुतल अभिनवि
ते कुंलां कुपल नवा पुस्कल सुकल डालुं पलवी ।
सहकार धाषे सो महोर चाषे आंखे पिकश्वर जति, इण मास० ॥५॥

तपे तडका वाय फरका अरकादिक श्वव (?) पअसमे
तिण दिन सुका गौ वसुका **जेठ** फुरका निगमे ।
कठ धांम आकुल थाए व्याकुल सुकुल कुल नर ने सती, इणमास० ॥६॥

करे घोर विकटा **असाढ** उमटा घटारी छडीयु नभे
गडडाट ग(गा)जे वाअ व(वा)जे षवे वीजलीअुं अभे ।
जलधार छुटी भर्या कुटी तुटी पाजा सरवती, इण मास० ॥७॥

ऊर्द्ध तरुवर नीलकंठधर मधुर स्वर मुख उचरे
दादुर टहके मेह टबके हलके **श्रावण** जल झरे ।
पीउ पीउ करतो बपेय लवतो छतो जलधर वर्षती, इण मास० ॥८॥

भाद्रव भाल्यो रंग ढाल्यो अभ्र माल्यो नवनवे
पचरंग प्रगटे ऐहसुं घटे वटे वादल जुजवे ।
खलहले खाला नदिनाला ढले ढाला दद्धीवती, इण मास० ॥९॥

आसुह सर्षा हुवा वर्षा गमी ईर्षा दुख टले
नवरंग नारि कज्जल सारी नाहवारी आणा वले ।
हिलिमिले रंगे नाह संगे बिहु उछंगे विलसती, इण मास० ॥१०॥

कात्तिअ कोली घऊंअ पोली घीए झबोली सहु जिमें
रस कलस थला हुवा बहुला भला भोजनसुं रमे ।
ते भले भावन अतिहि आवन संग साजन सोभती, इण मास० ॥११॥

मागिशिर मासे महुल वासे नारी पासे नाहलो
जिसो कमल कौले भमर भोले घोले रस ले आकलो ।
तिम कीआ कलीअुं रसे रलीयुं अंगे ढलीयुं व्रहेलती, इण मास० ॥१२॥

गिर हिम ढाले वह्न बाले शीतकाले **पोशमे**
घिरे घिरे सिगडी जमे खीचडी उलो उरडी नो गमे ।
तव पहिरि दोटि त्रीआ छोटी दे कसोटी पतिवती, इण मास० ॥१३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माह मास आधे कंबल कांधे जोग साधे जोगीआ
जे ग्रहवासि निर्द्धनासि प्रेहवासि उठिआ ।
धन धन करतां देस फिरता प्रवहण चडता भगवति, इण मास० ॥१४॥

फागुण फुले रंग धुले बहु अमुले कस क़सी
मृगमद्द अर्गे प्रेमवर्गे नाहशंगे रसमसी ।
इम रंग राति जोवन जाति मदि माती ऋतिपति, इण मास० ॥१५॥

कलसः कवित ॥

सदा सुबुध सरसत वत्त (?) देजो सेवकने
सदा सुबुध सरसत सुमति समपो मुझने ।
सदा सुबुध सरसत छठ सोपो छात्तरने
सदा सुबुध सरसत सत्त श्री माताजी सरने ॥
सदा लहु मान सनमांन जस द्यो विसे विसवा कविपणो ।
श्रीजसराज गुरु शिष भणे **मुनि भुधर** सुमति गणो ॥१६॥

इति श्री सरस्वतीजीना बारमासो छंद स्तोतर संपूर्ण ॥

—x—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org